मार्च २०१७ सहयोग शुल्क : रु. १.०० अंक : ३

दिव्यांग सेतु

संपादक : संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

दिव्यांगों के कार्यों में मदद रुपी हाथ बढाना
समाज एवं सरकार का कर्तव्य है ।
- माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदीजी

''हर दिव्यांग को यूनिक आई.डी. (U.D.I.D.)
कार्ड दिया जाएगा । ''
- थावरचंद गेहलोतजी

'' दिव्यांगों की मदद के लिए हम सदैव
तत्पर रहें, यह भी मानवता का एक सोपान है । ''
- संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

श्री वनुभाई टेलर एवं सुप्रसिद्ध गायिका अनुराधा पौड़वाल सूरत, गुजरात में २० फरवरी, २०१७ को संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई को दिव्यांग सेवा के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार मिलने पर सम्मानित करते हुए

डाउन सिन्ड्रोम, ओटिज्म, सेरेब्रल पाल्सी एवं
मल्टीपल डिसेबिलिटीज के बारे में
लोगों की जागरुकता बढ़ाने के लिए
मीडिया के माध्यम से जानकारी देते हुए
प.पू. संतश्री ॐऋषि

केन्द्र सरकार द्वारा दिव्यांगों के उत्कर्ष हेतु चलाई जा रही

निरामय हेल्थ पॉलिसी

पात्रता

- केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेब्रल पाल्सी, ऑटीज़्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टीपल डिसेबिलिटी (Cerebral Palsy, Autism, Mental Retardation, Multiple Disability) से असरग्रस्त दिव्यांगों को मिल सकती है।
- ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा।
- रु. २५०/- बी.पी.एल. एवं रु. ५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगों के लिए सिंगल प्रीमियम

लाभ

रु. १,००,०००/- तक का इन्श्योरेन्स मिल सकता है। (निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

आवेदन-पत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाण-पत्र/दस्तावेज

- सिविल सर्जन का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाण-पत्र
  (ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाण-पत्र में जरुरी है)
- वर्तमान की पासपोर्ट साइज़ फोटो
- राशन कार्ड की प्रमाणित कॉपी
- निवास स्थान का प्रमाण (राशन कार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
- बी.पी.एल. कार्ड (यदि बी.पी.एल. में आते हों तो)
- बैंक पास बुक की फोटो कॉपी (बैंक के IFSC कोड के साथ)
- उम्र का प्रमाण (वोटिंग कार्ड अथवा जन्म प्रमाण-पत्र अथवा विद्यालय छोड़ने का प्रमाण-पत्र)

यह प्रीमियम
ॐकार फाउन्डेशन
ट्रस्ट द्वारा
भरा जाएगा

दिव्यांगों के लिए स्माईल ईयर
दिनांक २६ जनवरी, २०१७ से दिनांक २६ जनवरी २०१८ तक
ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट NGO के माध्यम से
क्रिस्टल डेन्टल केयर (डॉ. शाश्वत जैन एवं चिकित्सक दल)
दिव्यांगों व शहीद सैनिकों के जरुरतमंद परिवारों के लिए
नि:शुल्क जाँच एवं निदान के लिए प्रतिबद्ध है

મંત્ર યુગપરિવર્તક પ. પૂ. સંતશ્રી ઋષિ પ્રિતેશભાઈના આશિર્વાદ અને માર્ગદર્શનથી શરુ થયેલ...

KRYSTAL DENTAL CARE
MULTISPECIALTY DENTAL CLINIC
DIGITAL SMILE DESIGN AND IMPLANT CENTRE
180, Titanium City Centre Mall, Near IOC Petrol Pump,
Anandnagar Road, Satellite, Ahmedabad - 380015
Clinic : 079 - 48008004
DSD

Dr. Shashwat Jain
+91 99786 01890
M.D.S. - Prosthodontics (Manipal)
PGCOI - Implant Specialist
DSD - Digital Smile Design
TIMINGS :
10.00 am to 08.00pm

શ્રી પી. સી. જૈન ચાર્ટડ એકાઉન્ટન્ટની છત્રછાયામાં ચાલતી...

દાંતના તમામ દર્દોનું એકમાત્ર સમાધાન સ્થળ એટલે...
ક્રીસ્ટલ ડેન્ટલ કેર

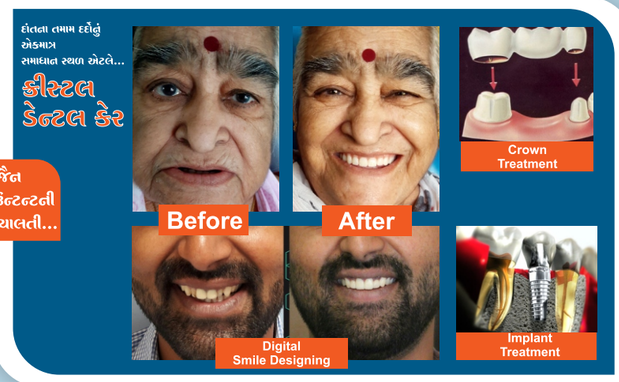

Consultant Prosthodontist & Implantologist
- Maxillofacial Prosthetics
  - Cancer Rehabilitation
  - Trauma Rehabilitation
- Implant Rehabilitations
- Digital Smile Designing
- Full Mouth Rehabilitations
- Crowns & Veneers
- Full & Partial Dentrures

WHAT WE DO:
- Implant treatment
- Digital Smile Design
- Dentistry for aged patients
- Fixed and removable dentures
- Crowns and Veneers
- Prosthetic replacements (Eye, Ear, Nose, Fingers)
- Orthodontics
- Dentistry for Kids
- Root canal treatment
- Gum treatment
- Laser dentistry

OPG Facility available
Pick up & Drop Facility for Senior Citizens

Website : www.krystaldentalcare.com | Email: drs@krystaldentalcare.com

फॉर्म

संस्था का नाम :-

संस्था का पता :-

संस्था का प्रश्न :-

mail ID :-

मोबाइल नंबर :-

लेन्डलाइन नंबर :-

आप अपनी संस्था में दिव्यांग बालकों द्वारा फुल स्केप पेज में चित्र बनवाकर हमारी संस्था में भेज सकते हैं। इन चित्रो में प्रथम तीन चित्रों को हमारी संस्था की और से पुरस्कृत किया जाएगा. प्रविष्टियाँ भेजने की अंतिम तिथि 31मई 2017

प्रथम - रु. १५००/-

द्वितीय - रु.१०००/-

एवं तृतीय रु.५००/-

चित्र के पीछे की ओर दिव्यांग बालक/बालिका/व्यक्ति का नाम, संस्था का पूरा नाम, संस्था का पता, लेन्डलाइन नंबर अथवा/एवं मोबाइल नंबर अवश्य लिखें।

किसी भी संस्था की ओर से दिव्यांगो के प्रति किसी भी प्रकार की सलाह, उनकी तकलीफें, उनसे संबंधित प्रश्नों, उनके लिए किए गए कार्यक्रम, उनके विकास के लिए किए गए अच्छे कार्यों की जानकारी इत्यादि हमारी पत्रिका में नि:शुल्क छापी जाएगी।

दिव्यांग सेतु

मासिक पत्रिका

प्रेरणास्त्रोत और संपादक :

संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

सह-संपादक :

मिहीरभाई शाह

M. : 9724181999

संपर्क-सूत्र

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट (NGO)

Trust Reg. No. : E/20646/Ahmedabad

ई-७२, आयोजन नगर सोसायटी,

श्रेयस क्रोसिंग के पास,

वासणा, अहमदाबाद.

मोबाईल : 9974955365,

9974955125

मुद्रक :

प्रिन्ट विज़न प्रा.लि.

आंबावाडी बजार, अहमदाबाद-६.

फोन : (079) 26405200

मार्च : २०१७

पृष्ठ संख्या : १६

वर्ष : ०१

अंक : ३

सहयोग शुल्क : रु. १/-

संपादकीय

'दिव्यांग सेतु' पत्रिका के प्रथम संस्करण को दिव्यांगों के कल्याण हेतु कार्यरत संस्थाओं, गुजरात सरकार एवं खास तौर पर आप सभी पाठकों से मिले उत्साहजनक प्रतिभाव के लिए हम आप सबके आभारी हैं।

भारत को विकसित राष्ट्र के रूप में स्थापित करने के लिए भारत सरकार द्वारा अनेक कदम जैसे - बुलेट ट्रेन, स्मार्ट सिटी, कैशलेस अर्थव्यवस्था, मेक इन इंडिया इत्यादि उठाए जा रहे हैं जिनके चलते देश विकास की नई ऊँचाईयाँ छूने को तत्पर है। पर इन सबके साथ ही विश्व में यदि भारत को अपना वर्चस्व स्थापित करना है तो देश के दिव्यांगों को मुख्यधारा में लाना होगा। उन्हें स्वरोजगार अथवा रोजगार के अवसर देकर उनके जीवन को नई दिशा देते हुए उन्हें राष्ट्र की तरक्की में सहभागी बनाना होगा। तभी हम सच्चे अर्थों में विकसित राष्ट्र बन पाएँगे।

दि. १७ फरवरी, २०१७ के दिन भारत सरकार द्वारा नियुक्त राष्ट्रीय दिव्यांग कमिश्नर डॉ. कमलेश पांडेय एक मीटिंग के लिए अहमदाबाद, गुजरात आए, जिसमें मैं भी उपस्थित रहा था। दिव्यांगों के सशक्तिकरण एवं उनकी समस्याओं के निराकरण के प्रति उनका दृष्टिकोण और सोच बहुत सकारात्मक थी। डॉ. पांडेय के अनुसार हर राज्य में दिव्यांग कमिश्नर के पद पर किसी दिव्यांग व्यक्ति की ही नियुक्ति की जाए, ऐसा प्रस्ताव विचाराधीन है एवं कुछ राज्यों में तो ऐसा किया भी जा चुका है। डॉ. पांडेय के साथ हुई चर्चा के विषय में आगे आपको विस्तार से बताया जाएगा।

इसी महीने में २१ मार्च, 'विश्व डाउन सिन्ड्रोम दिवस' के रूप में मनाया जाता है। पत्रिका के इस अंक में इस बीमारी की जानकारी, राष्ट्रीय न्यास (नेशनल ट्रस्ट) की जानकारी के साथ-साथ ही ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट द्वारा दिव्यांगों के उत्थान हेतु किए जा रहे सेवाकीय कार्यों की जानकारी आपको देंगे।

यदि आप भी अपने क्षेत्र की दिव्यांगों के विकास से जुड़ी किसी संस्था अथवा उनके लिए समर्पित किसी व्यक्ति विशेष की जानकारी इस पत्रिका के माध्यम से देना चाहते हैं, तो आपका स्वागत है।

साथ ही दिव्यांगों के सशक्तिकरण एवं विकास हेतु सरकार द्वारा प्रदत्त सुविधाओं, कल्याण योजनाओं के बारे में आपके सुझाव, आपकी शिकायतें भी हमें लिख भेजिए। यह पत्रिका आपकी आवाज़, संबंधित अधिकारियों तक पहुँचाने का एक सशक्त सेतु बनेगी, इसी आशा के साथ.....

- संत श्री ॐऋषि प्रितेशभाई

सत्यमेव जयते

रमणलाल वोरा
अध्यक्ष
गुजरात विधानसभा

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट, अहमदाबाद द्वारा 'दिव्यांग सेतु' नामक पत्रिका हिन्दी भाषा में प्रकाशित की जा रही है, यह जानकर आनंद हुआ।

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट, अहमदाबाद द्वारा दिव्यांगों के कल्याण के लिए अनेक काम किए जा रहे हैं, यह एक सराहनीय एवं प्रशंसनीय कार्य है। ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट, अहमदाबाद दिव्यांग विद्यार्थियों के प्रति सहानुभूति रखते हुए उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के लिए अथक प्रयत्नशील है, जो प्रशंसनीय है।

संस्था द्वारा दिव्यांग सेतु नामक पत्रिका हिन्दी भाषा में प्रकाशित की जा रही है जिसमें दिव्यांगों के लिए राज्य सरकार द्वारा चलाई जा रही कल्याणकारी योजनाएँ साथ ही अन्य जरूरी जानकारियों का समावेश किया गया है जो दिव्यांग विद्यार्थियों के जीवन-यापन के लिए पथ प्रदर्शक साथ ही दिव्यांगों के कार्यक्षेत्र में प्रोत्साहनजनक बनी रहेगी, ऐसी शुभेच्छा भेज रहा हूँ।

To,
Shree Kinjal A. Shah, *Trustee,*
Omkar Foundation Trust (NGO),
E/72, Ayojannagar Society,
Nr. Jivraj Mehta Hospital & Shreyas Crossing,
Vasna, Ahmedabad – 380 007,
Email: omkarfoundationtrust@gmail.com

आपका
रमणलाल वोरा

दिव्यांग कमिश्नर

डॉ. कमलेश पांडेय के साथ एक मुलाकात

– ॐऋषि की कलम से

भारत सरकार द्वारा नियुक्त राष्ट्रीय दिव्यांग कमिश्नर डॉ. कमलेश पांडेय दि. १७ फरवरी, २०१७ के दिन अहमदाबाद, गुजरात एक मीटिंग के लिए आए थे, जिसमें मैं भी उपस्थित रहा था। इस मीटिंग का मुख्य उद्देश्य दिव्यांग कल्याण के क्षेत्र में कार्य कर रहे सभी व्यक्ति एवं गैर सरकारी संस्थाओं की समस्याएँ सुनकर उनका हल निकालना था। दिव्यांगों के सशक्तिकरण एवं उनकी समस्याओं के हल के प्रति डॉ. पांडेय के विचार सुनने का अवसर मिला, साथ ही अपनी बात कहने का भी। इस मीटिंग में दिव्यांगों के कल्याण हेतु कई प्रस्ताव रखे गए। सरकारी तंत्र की सक्रिय रूप से दिव्यांग कल्याण कार्यक्रमों में सहभागिता, सरकार द्वारा दिव्यांग कल्याण हेतु आवंटित राशि का उपयोग सकारात्मक ढंग से हो, इस बारे में भी विस्तृत चर्चा हुई।

उपरोक्त प्रस्तावों में एक मुख्य प्रस्ताव था कि हर राज्य में दिव्यांग कमिश्नर के पद पर एक दिव्यांग की ही नियुक्ति की जाए। इस बारे में मैं आप सबसे विस्तार पूर्वक चर्चा करना चाहूँगा। मेरे मतानुसार एक दिव्यांग व्यक्ति ही दिव्यांग कमिश्नर के पद के साथ सही ढंग से न्याय कर सकता है।

भारत जैसे विकासशील देश में जहाँ आँकडों के अनुसार दिव्यांगों की संख्या बहुत अधिक है, उनकी समस्याओं, उनके अनुभवों को समझना एवं साथ ही साथ उन समस्याओं का निदान एक दिव्यांग ही ज्यादा अच्छी तरह से कर सकता है क्योंकि वो स्वयं भी इस स्थिति का सामना कर रहा है। दिव्यांग व्यक्ति चूँकि सामने वाले की समस्या को समझेगा तो वो उसका निदान भी शीघ्रतापूर्वक करना चाहेगा।

कई बार हमने देखा है कि दिव्यांग व्यक्ति बड़े सरकारी अधिकारियों के समक्ष अपनी समस्या कहने में संकोच अनुभव करते हैं। इसी प्रकार मूक/बधिर दिव्यांग भी अपनी बात पूरी तरह से समझाने में असमर्थ होते हैं। ऐसे में अगर सामने कमिश्नर भी दिव्यांग हो तो वो नि:संकोच सरलतापूर्वक अपनी समस्या उसे बता सकेंगे।

मेरे मतानुसार सरकारी अनुदान के अलावा दिव्यांग कल्याण हेतु अतिरिक्त राशि जुटाने का दायित्व भी दिव्यांग कमिश्नर के अधिकार क्षेत्र में लाया जाना चाहिए, जिससे दिव्यांगों की अधिकाधिक जरूरतें पूरी हो सकें एवं उनकी शिक्षा, रोजगार, इलाज इत्यादि में किसी प्रकार का व्यवधान ना आए। इस प्रयोजन के लिए वो विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन कर फंड इकट्ठा करके जरूरतमंद दिव्यांगों अथवा संस्थाओं को दे सकते हैं। मेरे विचार से यह एक क्रांतिकारी पहल होगी जिससे समाज में किसी भी दिव्यांग को कभी भी अपनी जरूरतों, शिक्षा, रोजगार के लिए दूसरों की दया पर आश्रित नहीं रहना पड़ेगा। मैं मानता हूँ कि यह सब करने की जिम्मेदारी सरकार की ही है, परंतु भारत जैसे विशाल देश में सरकार के पास दूसरे इतने कार्य एवं योजनाएँ होती हैं कि वो दिव्यांगों हेतु आवंटित राशि चाहकर भी हर बार बढ़ा नहीं सकते। इन सब कार्यों को सुचारु रूप से कर पाने के लिए दिव्यांग कमिश्नर के पद पर एक शिक्षित दिव्यांग (कम से कम ग्रेजुएट) को ही आसीन करना चाहिए। दिव्यांग कमिश्नर के अतिरिक्त एक वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी की नियुक्ति प्रबंधन कार्य को सुचारू रूप से कार्यान्वित करने के लिए की जा सकती है।

यदि उपरोक्त बातों को ध्यान में रखते हुए दिव्यांग कमिश्नर के पद पर नियुक्ति हेतु नियमों का गठन किया जाए तो मेरा दृढ़ रूप से यह मानना है कि यह शुरुआत दिव्यांगों के लिए एक क्रांति का उदय होगी, एक नई पहल होगी।

दिव्यांग सेतु
सेवा एवं सरकार

नेशनल ट्रस्ट ऑफ इंडिया (राष्ट्रीय न्यास)
क्षमता विकास, बढाएँ विश्वास

नेशनल ट्रस्ट भारत सरकार के सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय के अधीन गठित एक निकाय है जिसकी स्थापना 'नेशनल ट्रस्ट फॉर दि वेलफेयर ऑफ पर्सन्स विद ऑटिज़्म, सेरेब्रल, पाल्सी, मेन्टल रिटार्डेशन एंड मल्टीपल डिसेबिलिटीज़' एक्ट के अंतर्गत की गई।

इसकी स्थापना का मुख्य उद्देश्य एक ऐसे समाज की स्थापना है जहाँ दिव्यांग भी सक्षम रूप से पूर्ण भागीदारी के साथ, समान अधिकारों एवं अवसरों के साथ, पूर्ण आत्म सम्मान से जी सकें।

अपनी स्थापना के साथ ही नेशनल ट्रस्ट द्वारा, दिव्यांगों एवं उनके परिवारों की क्षमता के विकास के लिए अवसर प्रदान करने, उनके अधिकारों को पूरा करने, उन्हें रोज़मर्रा की ज़िन्दगी का हिस्सा बनाने के लिए एक सहयोगी वातावरण एवं एक समावेशी समाज के निर्माण को बढ़ावा देने हेतु सतत प्रयास किए जा रहे हैं। नेशनल ट्रस्ट के इन प्रयासों के तहत दिव्यांग कल्याण हेतु चलाई जा रही विभिन्न योजनाएँ इस प्रकार हैं –

दिशा (बाल्यकालिक हस्तक्षेप एवं स्कूल की तैयारी योजना)

यह योजना १० वर्ष तक के उन दिव्यांग बच्चों के लिए है जो नेशनल ट्रस्ट एक्ट में समाहित नि:शक्तताओं से पीड़ित हैं।

विकास (डे केयर)

इस डे केयर योजना का उद्देश्य १० वर्ष से ऊपर की आयु के दिव्यांगों, जो ऑटिज़्म, सेरेबल पाल्सी, मानसिक मंदता एवं बहु नि:शक्ततासे पीड़ित हैं, की पारस्परिक एवं व्यवसायिक कुशलता को बढ़ाने का है।

समर्थ (राहतकारी देखभाल)

इस योजना का उद्देश्य अनाथ बच्चों, संकटग्रस्त परिवारों, राष्ट्रीय न्यास अधिनियम के तहत आती दिव्यांगता के चार प्रकारों में से कम से कम किसी एक के अंतर्गत आने वाले बीपीएल, एलआईजी परिवारों के नि:शक्तताग्रस्त व्यक्तियों को सामूहिक आश्रम अथवा घर प्रदान करना है।

घरौंदा (व्यस्कों के लिए सामूहिक गृह)

इस योजना के तहत ऑटिज़्म, सेरेब्रल पाल्सी, मानसिक मंदता एवं बहु नि:शक्तताग्रस्त व्यक्तियों को आजीवन आवास एवं देखभाल सेवाएँ प्रदान की जाती हैं।

निरामय (स्वास्थ्य बीमा योजना)

इस योजना का उद्देश्य ऑटिज़्म, सेरेब्रल पाल्सी, मानसिक मंदता एवं बहु नि:शक्तताग्रस्त व्यक्तियों को मामूली कीमत पर स्वास्थ्य बीमा प्रदान करना है।

सहयोगी (देखभाल कर्ता प्रशिक्षण योजना)

इस योजना का लक्ष्य जरूरतमंद दिव्यांगजनों और उनके परिवारों की सेवा में रूचि रखनेवालों को गुणवत्तापूर्वक प्रशिक्षण उपलब्धकराना है।

ज्ञान प्रभा (शैक्षणिक सहयोग)

ज्ञान-प्रभा योजना का उद्देश्य ऑटिज़्म, सेरेब्रल पाल्सी, मानसिक मंदता एवं बहु नि:शक्तताग्रस्त व्यक्तियों को शैक्षणिक/व्यवसायिक पाठ्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना है।

प्रेरणा (विपणन सहयोग)

प्रेरणा एक विपणन सहायता योजना है जो ऑटिज़्म, सेरेब्रल पाल्सी, मानसिक मंदता एवं बहु नि:शक्तताग्रस्त व्यक्तियों द्वारा उत्पादित उत्पादों और सेवाओं की बिक्री के लिए व्यवहार्य और व्यापक चैनल के निर्माण का कार्य करती है।

संभव (सहायक सामग्री और सहायता उपकरण)

इस योजना का उद्देश्य नि:शक्तताग्रस्त व्यक्तियों से संबंधित उपकरणों, सॉफ्टवेयर और सहायक उपकरणों को संग्रहीत करने के लिए प्रत्येक शहर में अतिरिक्त संसाधन केन्द्रों की स्थापना करना है।

बढ़ते कदम (जागरूकता एवं समुदाय से मेलजोल)

यह योजना राष्ट्रीय न्यास के दिव्यांगजनों के बारे में जागरूकता फैलाने के लिए राष्ट्रीय न्यास के पंजीकृत संगठनों की सहायता करती है।

३० दिसम्बर २०१६ को सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री श्री थावरचंद गेहलोत द्वारा राष्ट्रीय न्यास की स्थापना दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय न्यास का 'मोबाइल एवं फेसबुक पेज' प्रारंभ किया गया जिसकी वजह से राष्ट्रीय न्यास द्वारा दिव्यांगों के लिए किए जा रहे कार्यों, NGO's और रजिस्टर्ड संगठनों की जानकारी पाना बहुत ही आसान हो गया है।

राष्ट्रीय न्यास दिव्यांगों की छिपी क्षमता को विश्व के समक्ष उजागर करने के लिए एक प्लेटफॉर्म देता है और उन्हें अपने अधिकारों के प्रति जागरूक बनाते हुए सम्मानपूर्वक, स्वाभिमानपूर्वक जीवन जीने की आज़ादी भी।

21 मार्च विश्व डाउन सिन्ड्रोम दिवस

हर वर्ष २१ मार्च विश्व डाउन सिन्ड्रोम दिवस के रूप में मनाया जाता है ताकि इस बीमारी के बारे में लोग ज्यादा से ज्यादा जागरुक हों।

डाउन सिन्ड्रोम को 'ट्राइसोमि २१' के नाम से भी जाना जाता है और यह जन्म से पूर्व ही हो जाता है। डाउन सिन्ड्रोम शारीरिक एवं मानसिक लक्षणों का एक समूह है जो पीड़ित में एक गुणसूत्र-गुणसूत्र २१ के ज्यादा होने की वजह से होता है। आमतौर पर एक व्यक्ति में ४६ गुणसूत्र होते हैं, परंतु डाउन सिन्ड्रोम से पीड़ित ज्यादातर लोगों के ४७ गुणसूत्र हैं। दुर्लभ मामलों में, दूसरे गुणसूत्र डाउन सिन्ड्रोम कारण बनते हैं।

डाउन सिन्ड्रोम, यह नाम एक ब्रिटिश डॉक्टर जॉन लेंगडॉन डाउन, जिन्होंने १८४४ में इस अवस्था के बारे में सबसे पहले समझाया था, के नाम पर रखा गया है। हालाँकि, एक अतिरिक्त गुणसूत्र इस बीमारी का कारण है, यह खोज १९५९ में हुई। एक अतिरिक्त या असामान्य गुणसूत्र मस्तिष्क एवं शरीर के विकास पर विपरीत असर डालता है।

कारण :

विशेषज्ञ अभी तक डाउन सिन्ड्रोम होने का कोई सही कारण नहीं ढूँढ पाए हैं, परंतु कुछ कारण जिनकी वजह से आपके बच्चे को डाउन सिन्ड्रोम हो सकता है, इस प्रकार हैं—

- यदि गर्भधारण करते वक्त आपकी उम्र ३५ वर्ष या अधिक हो,
- आपका भाई अथवा बहन डाउन सिन्ड्रोम से पीड़ित हो,
- यदि पहले से ही आपका एक बच्चा डाउन सिन्ड्रोम से पीड़ित हो।

लक्षण :

- देर से होता शारीरिक विकास
- चेहरे की खास बनावट जैसे चपटा सा चेहरा, ऊपर या नीचे की तरफ झुकी आँखें, छोटे एवं नीचे की ओर झुके कान, बड़ी सी जीभ, छोटा मुँह, छोटी नाक
- शरीर के अनुपात में सिर का छोटा होना
- शरीर के अनुपात में छोटे हाथ एवं पैर
- छोटी उंगलियों वाला चौड़ा हाथ का पंजा एवं हथेली पर एक सल
- चौड़ा पैर का पंजा, छोटी उंगलियाँ, अंगूठे एवं पहली उंगली के मध्य बहुत ज्यादा जगह
- कम माँसपेशियाँ
- ढीले जोड़
- अल्प अथवा औसत बौद्धिक क्षमता

गर्भावस्था (पहली अथवा दूसरी तिमाही में) के दौरान ही स्क्रीनिंग टेस्ट जैसे अल्ट्रासाउंड अथवा रक्त परीक्षण से बच्चे में डाउन सिन्ड्रोम के लक्षण पता चल जाते हैं, परंतु यह कई बार गलत भी सिद्ध हो सकते हैं। स्क्रीनिंग टेस्ट की रिपोर्ट असामान्य आने पर आप आगे भी विशिष्ट प्रकार की जाँच करा सकते हैं, जो आपके बच्चे को डाउन सिन्ड्रोम होने या ना होने की पुष्टि करती है।

डाउन सिन्ड्रोम से पीड़ित होने पर बच्चे को आँख, कान अथवा थायराइड की समस्या हो सकती है। डाउन सिन्ड्रोम से पीड़ित ५०% लोगों को हृदयरोग होता है। ज्यादातर पीड़ित बच्चों को स्पीच थेरैपी की जरूरत पडती है। अभी तक इस बीमारी का कोई शर्तिया इलाज नहीं मिल सका है। इसका इलाज लक्षणों के अनुसार हर पीड़ित का अलग-अलग ढंग से किया जाता है। डॉक्टर को हर थोड़े अंतराल में दिखाते रहना उनके स्वास्थ्य को सही रखने के लिए बहुत जरूरी है।

डाउन सिन्ड्रोम से पीड़ित बच्चे को बड़ा करना एक चुनौती भी है और पुरस्कार भी। शिक्षा एवं समुचित देखभाल से आप डाउन सिन्ड्रोम से पीड़ित बच्चों को एक अच्छी जिन्दगी दे सकते हैं। अपने बच्चे की मदद करने के लिए आप इस बीमारी के बारे में ज्यादा से ज्यादा जानकारी प्राप्त करें, सरकार द्वारा ऐसे रोगियों के लिए चलाई जा रही विभिन्न योजनाएँ जिनमें वित्तीय मदद, शिक्षा के क्षेत्र में मदद आदि की जानकारी, अपने क्षेत्र के अन्य संसाधनों एवं दिव्यांगों के लिए चल रही गैर सरकारी संस्थाओं की जानकारी प्राप्त करें।

डाउन सिन्ड्रोम :
क्या यह सच में एक नि:शक्तता है ?
या विविध तरह से भावों की अभिव्यक्ति

डाउन सिन्ड्रोम एक जीन संबंधित (genetic) अवस्था है, जिसमें रोगी का पर्याप्त ध्यान, प्रशिक्षण, देखभाल करने से वह एक उत्पादक एवं सम्मानित ज़िंदगी जी सकता है। औसत या उससे कम बौद्धिक क्षमता एवं शारीरिक नि:शक्तता के बावजूद भी डाउन सिन्ड्रोम के बहुत से रोगियों ने वो मुकाम हासिल कर दिखाया है, जिसकी कल्पना करना एक सामान्य व्यक्ति के लिए भी कभी कभी ही संभव हो पाता है। ऐसी ही एक शख्सियत का नाम है, बबली रामचंद्रन, जो एक शास्त्रीय नृत्यांगना हैं।

बबली, जो डाउन सिन्ड्रोम से पीड़ित हैं, का जन्म १९८१ में हुआ। डाउन सिन्ड्रोम की वजह से उनकी दृष्टि सामान्य नहीं थी। आँखों की चार बड़ी शल्य चिकित्साएँ होने की वजह से ठीक तरह से ना दिखाई देने के बावजूद, शारीरिक, मानसिक नि:शक्तता के बावजूद भी उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और नृत्य को अपने भावों को अभिव्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम बनाया और इस नृत्यकला ने उन्हें आत्मविश्वास, आत्म-सम्मान के साथ जीने की एक वजह दी। वह भरतनाट्यम की मुद्राओं एवं मुखाकृति से अपनी खुशी, क्रोध, पीड़ा या प्यार, सभी अभिव्यक्त कर लेती हैं। वह अपनी नृत्यकला से इतनी अधिक करीब हैं कि वो सोते, उठते, खाते यानि हर वक्त उसी के माध्यम से अपने भाव व्यक्त करती हैं। आज बबली अपनी नृत्यकला का जादू अपने आत्मविश्वास से भरे प्रदर्शन से सब ओर फैला चुकी हैं। वो कई बार मीनाक्षी मंदिर, मदुरई में एवं सिंगापुर में फरवरी २००४ में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय डाउन सिन्ड्रोम कांग्रेस में भी अपनी नृत्यकला का प्रदर्शन कर चुकी हैं।

'मुझे नृत्य करना पसंद है', ऐसा कहने वाली बबली को सभी महान नृत्य कलाकारों ने बहुत प्रोत्साहित किया है और हम आशा करते हैं कि बबली हमेशा "a Bundle of Joy" रहें जैसी वो हैं।

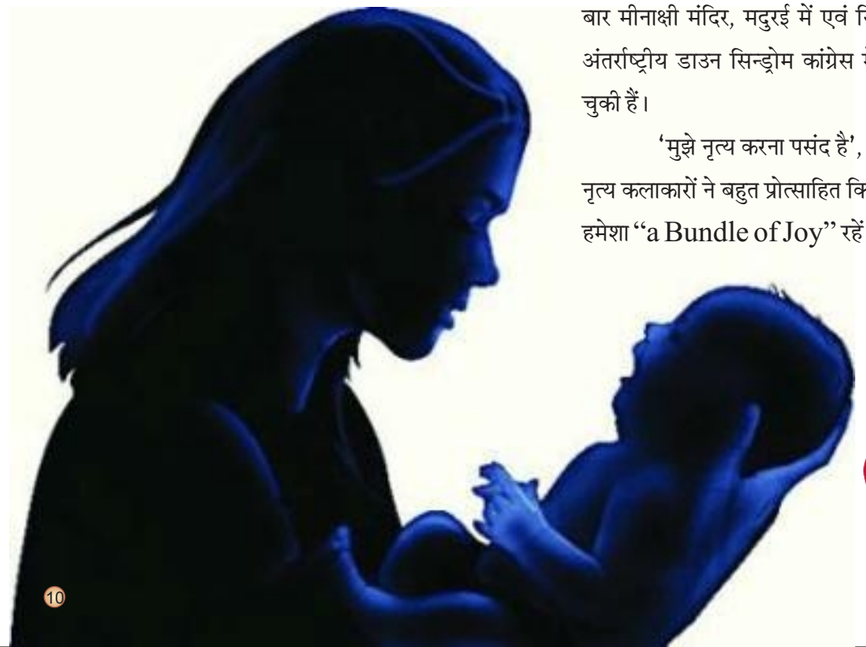

21 World Down Syndrome Day

सद्‌विचार परिवार

"प्रार्थना के लिए जुड़े दो हाथों की जगह दिव्यांगों के विकास के लिए बढाया गया एक हाथ ज्यादा अच्छा है"। इस बात के महत्व को स्वीकारते हुए सद्‌विचार परिवार द्वारा सन् १९८१ में, जो वर्ष पूरे विश्व में अंतर्राष्ट्रीय दिव्यांग वर्ष के रूप में मनाया गया था, गांधीनगर, गुजरात के पास उवारसद गाँव के प्राकृतिक सुरम्य वातावरण में एक गुरुकुल की स्थापना की गई जहाँ दिव्यांग विद्यार्थियों को नि:शुल्क शिक्षा-संस्कार-निवास-भोजन के साथ स्वावलंबन का प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

वैसे तो इस संस्था की शुरूआत १९७४ में साबरमती, अहमदाबाद में हो चुकी थी, पर उवारसद में दिव्यांग पुनर्वास केन्द्र का शुभारंभ ब्रहलीन संत पू. श्री डोंगरेजी महाराज के शुभ आशीर्वाद से हुआ। आज इस संस्था में दिव्यांग बालकों के लिए कक्षा १ से १२ तक का विद्यालय एवं औद्योगिक शिक्षण केन्द्र के साथ टेक्नीकल बोर्ड द्वारा मान्य अलग-अलग व्यवसायिक शिक्षण केन्द्र कार्यरत हैं। दिव्यांगों के प्रति अत्यंत श्रद्धा एवं निष्ठापूर्वक किए जा रहे अपने कार्यों के परिणाम स्वरूप इस केन्द्र को वर्ष १९९३ में गुजरात सरकार की ओर से 'श्रेष्ठ दिव्यांग सेवा पारितोषिक' भी मिल चुका है।

यहाँ दिव्यांग बालकों के लिए चल रहे विभिन्न केन्द्र इस प्रकार हैं –

(१) प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक शाला

यहाँ दिव्यांग बालकों के लिए प्राथमिक शाला, माध्यमिक शाला एवं उच्चतर माध्यमिक शाला कार्यरत है जिनमें उन्हें उत्कृष्ट शिक्षा के साथ साथ अच्छे संस्कार भी दिए जाते हैं। साथ ही साथ उन्हें कम्प्यूटर शिक्षण, संगीत शिक्षण, शारीरिक शिक्षण जैसे योग शिक्षा एवं विभिन्न खेल-कूदों का विशेष प्रशिक्षण दिया जाता है। संस्था के पास अपनी स्वयं की विशाल लायब्रेरी, संगीत शाला, कम्प्यूटर शिक्षण वर्ग और खेलकूद के लिए विशाल मैदान हैं।

(२) औद्योगिक तालीम केन्द्र

यहाँ चलाये जा रहे औद्योगिक तालीम केन्द्र के कोर्स सरकार मान्य आई.टी.आई. के समकक्ष हैं।

प्रिन्ट फिनीशींग एवं पेकेजिंग (अवधि-१ वर्ष)

ग्राफिक आर्ट्स (प्रिन्टिंग टेक्नोलॉजी) (अवधि-१ वर्ष)

डी.टी.पी. (कम्प्यूटर), स्क्रीन प्रिन्टिंग

(३) व्यवसायिक शिक्षण केन्द्र

अंबुजा सिमेन्ट फाउन्डेशन एवं सद्‌विचार परिवार के संयुक्त उपक्रम - SEDI (Skill & Entrepreneurship Development Institute) के अंतर्गत ग्रामीण एवं दिव्यांग युवावर्ग को योग्य व्यवसायिक शिक्षा प्रदान की जाती है जिससे वो स्वावलंबी बने एवं सर उठाकर जी सकें। यहाँ १ महीने से ६ महीने तक की अवधिके विभिन्न रोजगारलक्षी अभ्यासक्रम चलाए जाते हैं जैसे मोबाइल रिपेयरिंग, हाउस वायरिंग एंड प्लम्बिग, इंडस्ट्रीयल सिक्युरिटी, नर्सिंग इत्यादि।

(४) गौ-पालन केन्द्र

दिव्यांग विद्यार्थियों को ताजा एवं पौष्टिक दूध, घी मिले, इस हेतु संस्था की अपनी स्वयं की गौशाला भी है। विद्यार्थियों को गौ-पालन हेतु प्राथमिक शिक्षा भी दी जाती है साथ ही साथ उन्हें खेतीबाड़ी जैसे व्यवसाय में रूचि उत्पन्न हो, ऐसी जानकारी भी दी जाती है।

(५) फिज़ियोथेरैपी केन्द्र

१३-०७-२०१५ को गुजरात सरकार के तत्कालीन सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री श्री रमणभाई वोरा द्वारा संस्था में फिज़ियोथेरैपी केन्द्र का उद्‌घाटन किया गया जिसकी उत्कृष्ट सेवाओं का लाभ दिव्यांग बालकों के साथ-साथ आसपास के गाँव वाले भी उठा रहे हैं।

विकलांग केन्द्र, उवारसद में शिक्षित बहुत से दिव्यांग विद्यार्थी आज उच्च पदों पर आसीन हैं।

तो आइए, हम सब भी मिलकर यह आह्‌वान करें कि जब हमें मानव बनकर जीने का सौभाग्य मिला है तो मानवतापूर्ण कार्य करके अपने और दूसरों के जीवन को महकाना हमारा ध्येय बने।

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट द्वारा दिव्यांगों के लिए की गई सेवाकीय प्रवृत्तियाँ

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट द्वारा दिव्यांगों के उत्थान के लिए अथक प्रयास किए जा रहे हैं।

इन प्रयासों के फलस्वरूप १०० से भी अधिक दिव्यांगों को अल्प समय में ही दिव्यांग पहचान पत्र मिले। ३०० से भी अधिक दिव्यांगों की निरामय पॉलिसी के लिए संस्था द्वारा रकम चुकाई गई। ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट द्वारा किए गए प्रयासों के फलस्वरूप गुजरात सरकार द्वारा चलाई जा रही साधन सहाय योजना के अंतर्गत दिव्यांगों को निम्नलिखित जीवनोपयोगी साधन प्राप्त हुए।

	नाम	साधन
(१)	दक्षाबेन अमृतभाई रामी	सिलाई मशीन
(२)	राकेश अरूणभाई नायक	व्हील चेयर
(३)	जगदीश शिवभाई राठोड़	सिलाई मशीन
(४)	हेमंत अरूणभाई सोनी	दुपहिया साईकिल
(५)	बहादुरसिंग राणामलसिंग जाड़ेजा	व्हील चेयर
(६)	नयनभाई विदुरभाई वाघेला	सिलाई मशीन
(७)	कुश दीपकभाई राघवानी	म्यूज़िक संसाधन
(८)	उस्मानगनी अहमदहुसैन डाखवाला	व्हील चेयर
(९)	गुलशनबानू पठान	सिलाई मशीन
(१०)	दिनेशभाई करशनभाई जाधव	ट्राइसाईकिल
(११)	मंजुलाबेन दिनेशभाई जाधव	सिलाई मशीन
(१२)	नर्मदाबेन जेठाभाई परमार	ट्राइसाईकिल

'दिव्यांग सेतु' पत्रिका में अपना विज्ञापन देकर आप भी दिव्यांगों की मदद के पुनीत कार्य में सहभागी बन सकते हैं।

विज्ञापन की दरें इस प्रकार हैं

Title-2	रू. १०,०००/-
Title-3	रू. १०,०००/-
Title-4	रू. १०,०००/-
आधा पेज –	रू. ५,०००/-

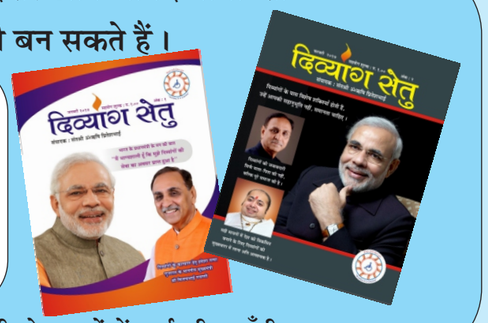

विज्ञापन से प्राप्त समस्त राशि दिव्यांग कल्याणकारी योजनाओं में खर्च की जाएँगी।

'दिव्यांग स्माइल ईयर'

'दिव्यांग स्माइल ईयर' (२६ जनवरी २०१७ से २६ जनवरी २०१८) के तहत इस बार क्रिस्टल डेन्टल केयर टीम (डॉ. शाश्वत जैन, डॉ. अमी पांचाल एवं असिस्टेंट अविनाश अहीर) द्वारा ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट के सहयोग से नवजीवन ट्रस्ट स्कूल फॉर मेन्टली चेलेन्ज़्ड, मेमनगर गाँव, अहमदाबाद में ७५ मानसिक मंदता वाले दिव्यांगों (उम्र ६ वर्ष से ४५ वर्ष तक) के लिए डेन्टल चेकअप कैम्प का आयोजन किया गया।

दिव्यांगों के माता-पिता/पालकों को इस कैम्प की सूचना पहले ही दे दी गई थी जिसकी वजह से उनमें से बहुत से अपने बच्चों के साथ वहाँ मौजूद थे ताकि वो अच्छी तरह से अपने बच्चों की दाँतों की समस्याओं के बारे में बता सकें। बच्चों के चेकअप के बाद उनके माता-पिता/पालकों के दाँतों की भी जाँच की गई तथा उन्हे सही ढंग से ब्रश करने की विधिभी बताई गई। ढंग से ब्रश ना कर पाने की वजह से एवं दाँतों की ढंग से देखभाल ना कर पाने के कारण सबके दाँतों की स्थिति बहुत ही दयनीय थी और वो विभिन्न समस्याओं जैसे दाँतों का दर्द, कैविटीज़, टूटे हुए दाँत, फूले हुए मसूड़े, मुँह से बदबू आना, इत्यादि से पीड़ित थे। अब समस्या की गंभीरता के अनुसार उनका इलाज क्रमवार क्रिस्टल डेन्टल केयर क्लिनिक में किया जाएगा। इस पूरे आयोजन में नवजीवन ट्रस्ट के नीलेशभाई एवं ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट के मनीषभाई का सराहनीय योगदान रहा।

पिछला डेन्टल चेकअप कैम्प जो समर्थ रेसीडेन्शियल एवं रिस्पाइट सेन्टर, जेतलपुर, अहमदाबाद के मंदबुद्धि बच्चों के लिए आयोजित किया गया था, उनका इलाज ११ मार्च २०१७ को क्रिस्टल डेन्टल केयर क्लिनिक, सेटेलाइट, अहमदाबाद में शुरु किया गया जिसके तहत उनके दाँतों की अल्ट्रासॉनिक क्लीनिंग, पायरिया का इलाज, दाँतों का निकालना, दाँतों की कैविटीज़ भरना इत्यादि किये गए। इलाज के लिए प्रतीक्षारत बच्चों के मनोरंजन के लिए क्रिस्टल केयर के वेटिंग एरिया में एक बाल फिल्म दिखाई गई और साथ ही बच्चों को आईस्क्रीम भी दी गई। इसके चलते बच्चों ने बहुत उल्लास के साथ अपना इलाज करवाया। टीम क्रिस्टल के अलावा, डॉ. शिल्वी शाह ने भी इलाज में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।